E ISSN: 2455-1511

Sanskruti International Multidisciplinary Research Journal

INDEXED, PEER-REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

Volume VI Issue III Jan-Feb-Mar 2021

URL:www.simrj.org.in Journal UOI:1.01/simrj

IFSIJ IMPACT FACTOR: 5.565

Editor-in-Chief
SANTOSH BONGALE

Issue Articles

Vol VI / Issue III / Jan-Feb-March 2021

Sr.No.	Article Name	Author Name	Downloads
1	Cover Page	-	Download
2	VEDIC PHYSICS: A BRIEF STUDY OF CREATION THEORY	Dr. Chandra Kanta Panda	Download
3	Rah Bhat Ki Ek Kahani: Jiti Baji Ki Haar	Dr. Dipak Jadhav	Download
4	Analysis of Goods and Service Tax(GST) In India	Prof. Amol Laxman Shinde	Download
5	Gramin Va Shahri Bharat : Ek Mulyamapan	Prof. Dr. Purushottam Gate	Download
6	Mithak (Purakatha) : Sankipana Va Swarup	Dr. Dinesh Waghumbare	Download
7	Constructivism strategy: For Better Classroom	Dr. Sunanda G. Rodge, Dr.Sanjivani Rathod	Download
8	POLY CYSTIC OVARIAN SYNDROM (PCOS): BY AYURVEDA	Vd. Jumnake V.S., Vd. Khiratkar A.N.	Download
9	POST CORONA VIRUS CHALLANGES FOR ALL ROUND DEVELOPMENT	Dr. Vikrant Kumar Sharma, Yadram Karmakar	Download
10	Lekhakachi Nirmiti Prakriya- Sanshodhnatmak Vedh	Dr. Vishakha Kamble	Download
11	Plyometrics-Important Methods of Sports Training	DR. Ibrahim H. Mulla	Download
12	An Analytical Study of the - Human Rights of Indian Women in Globalization	Mrs. Sunanda Anshul Raut	Download
13	THE WOMEN LABOUR VULNERABILITY AND WAGE DISCRIMINATION IN INDIA: AN ANALYSIS	Dr. Pratap Chandra Dash	Download
14	Dr. Babasaheb Ambedkar Vishyak Charitratmak Kadambaryanche Vangmayin Mulyamapan	Sanjiv Kamble	Download
15	Sugawa Masikache Visheshank : Ek Abhyas	Dipak Kamble	Download
16	Sarvjanik evam Niji Kshetra Ke Banko me Gair-Nishpadit Parisamptiyon Ka Tulnatmak Vishleshan	Rameshwary Meena	Download
17	Maharashtratil Katkari Jamatichya Aarthik va Samajik Samsyancha Abhyas	Avinash B. Koshti, Dr. M. U. Mulani	Download
18	Bhanukavi Yanchi Kavysanpada	Shri. Dipak Karanjkar	Download
19	Mahanubhav Sanpradayatil Ek Avtar: Shri. Govindprabhu	Swati Bandal	Download
20	Mahila Sakshmikaran Aani Swayamsahay Bachat Gat	Prof. Dr. Rekha Meshram	Download

SANSKRUTI INTERNATIONAL
MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
Journal homepage: http://www.simrj.org.in Journal UOI: 1.01/simrj

राह भटकी एक कहानी: 'जीती बाजी की हार'

डॉ दिपक जाधव
असिस्टंट प्रोफेसर, वेणूताई चव्हाण कॉलेज, कराड जिला- सातारा
Email id: dipakjadhav.hindi@gmail.com

'जीती बाजी की हार' प्रतिष्ठित नारीवादी चिंतक एवं लेखिका मन्नू भंडारी के राधाकृष्ण प्रकाशन से प्रकाशित कहानी संग्रह 'मैं हार गई' में संग्रहित कहानी है। जैसे कि विदित है, मन्नू भंडारी नारीवादी लेखिका है। अतः जीती बाजी की हार नारीवादी कहानी मानी जा सकती है। मन्नू भंडारी के नारीवाद की यह विशेषता है कि वह मध्यममार्गीय है। अर्थात् वह पुरुष, परिवार, संस्कृति से तालमेल बिठाने में यकीन करता है। वह अपने पात्रों को सामाजिक-सांस्कृतिक दायरे में व्यक्त करती है और उसी में उनके और समाज के उत्थान की कामना करती है।

मनु भंडारी एक और नारी स्वतंत्रता, नारी अधिकारों की बात करती है तो दूसरी ओर परिवार, संस्कृति, मान्यताओं के पक्ष में भी खड़ी हो जाती है। वह परंपरा एवं संस्कृति के नियंत्रण में नारी उत्थान की अपेक्षा रखती है। इस संदर्भ में वे लिखती हैं," हमारे देश का स्त्री विमर्श न पति, परिवार से निरपेक्ष है, न संतान निरमा इतनी छूट तो उसके लिए अनिवार्य है कि एक या पति के साथ संबंध गड़बड़ाने पर वह उसे छोड़कर दूसरे के साथ संबंध जोड़ ले।"[1] लेखिका के यह विचार समाज तथा परिवार के अनुकूल है। साथ ही परंपरागत मान्यता का समर्थन भी करने वाले हैं। वह परंपरागत संस्कृति तथा व्यवस्था के बीच स्त्री उन्नति को ढूंढती है। लेकिन कई बार इस उठापटक में वह नारी के बजाय परंपरा और पुरुषसत्ताक संस्कृति की वकालत करने लगती है। इस संदर्भ में उनके 'जीती बाजी की हार' कहानी को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

'जीती बाजी की हार' तीन महत्वकांक्षी और होनहार सहेलियों की कहानी है। ये सहेलियाँ आम लड़कियों से भिन्न, सजने-सवरने, शादी-परिवार से अधिक किताबों और विद्वत्त चर्चा में मगन रहती है। उनके नाम नलिनी, आशा और मुरला है। गर्मी की छुट्टियों में भी वे किताबें साथ लेकर ही घर जाती है। वे एक दूसरे से पत्र के माध्यम से बातें करती हैं। उनके पत्रों

में पढ़ी हुई किताबें, उनके लेखक, चर्चित विषयों का जिक्र होता। तीनों सहेलियाँ अपने भविष्य के प्रति सजग है।

छुट्टियों से वापस आने पर नलिनी की मनोदशा एवं व्यवहार से पता चलता है कि नलिनी का विवाह तय हुआ है। वह कहती है, "घर का वातावरण देखते हुए वह जानती थी कि शादी उससे करनी ही पड़ेगी। और इसीलिए जब उसे अपने अनुकूल पात्र नजर आया तो स्वीकृति दे दी।"[2] कुछ दिनों बाद नलिनी अनिच्छा से या वातावरण के दबाव के कारण अपनी पढ़ाई छोड़ शादी कर चली जाती है। एक बच्चे की माँ बन, सजने-संवरने की आदत को स्वीकार, पति-परिवार को ही अपना सबकुछ मान लेती है। घर संभालना, बच्चे की परवरिश करना, क्लब जाना ही उसका जीवन बना है। इस पर वह आशा और मुरला से कहती है, " .....वह आजकल केवल किताबी कीड़ा ही नहीं रही काफी काम की लड़की हो गई है। उसने सिलाई सीख ली है और घर पर ही सिलाई करके काफी किफायत कर लेती है।"[3]

आशा और मुरला एम. ए. प्रथम वर्ष की पढ़ाई पूरी कर द्वितीय वर्ष की तैयारी में जुट जाती हैं। गर्मियों की छुट्टियाँ भी पढ़ाई में ही बिताती है। पर दिवाली की छुट्टियों में आशा को मामा के घर जाना पड़ता है। उसका मामा एक प्रांतीय कवि से उसका परिचय करवाता है। आशा कवी के साहित्य, बातों एवं व्यक्तित्व से प्रभावित होती है और एम ए द्वितीय वर्ष की परीक्षाओं के उपरांत उसके साथ शादी कर लेती है। आशा का शादी करना उसका अपना निर्णय है। उसने किसी दबाव में नहीं तो अपनी पसंद के लड़के से शादी की है। इसे विवाह की आदर्श स्थिति माना जा सकता है।

मुरला एम.ए. की परीक्षाओं में विश्वविद्यालय में प्रथम आती है। अपने माता-पिता के आग्रह पर भी शादी के बजाय संशोधन कार्य को प्राथमिकता देती है। एक दिन आशा के भाई से उसे पता चलता है कि आशा को यही के अस्पताल में एक लड़का हुआ है। मुरला आशा से मिलती है तब उसकी बातों में भी नलिनी के समान घर, पति और बच्चों का जिक्र होता है। बातों बातों में आशा पूछती है कि तुम कब शादी कर रही हो। मुरला की शादी न करने की बात पर आशा नारी स्वभाव के बारे में "मुरला हो, चाहे कोई, इतना जानती हूँ कि जिससे शर्त लगा रही हूँ वह सब कुछ हो कर भी नारी है और नारी को एक साथ चाहिए, एक सहारा चाहिए, परिवार

चाहिए और चाहिए बच्चे। उच्च से उच्च शिक्षा भी उसकी इस भावना को नहीं कुचल सकती।"[4] कहते हुए मुरला से शर्त लगाती है कि अगर मुरला शादी नहीं करती है तो वह उसे जो मांगेगी, दे देगी।

इस बात को पंद्रह वर्ष बीत जाते हैं। मुरला शिक्षा विभाग में उच्च पदस्थ अधिकारी बन जाती है और आशा तीन बच्चों की माँ। एक सभा की अध्यक्षता के लिए मुरला इलाहाबाद जाती है, जहाँ उसकी भेंट आशा से होती है। मुरला दो दिन आशा के घर पर रहती है। आशा की पाँच साल की बच्ची मुरला से हिल मिल जाती है। तीसरे दिन मुरला जाने के लिए तैयार होती है तब आशा ही उसे शर्त की याद दिलाती है। वह कहती है कि मैं हार गई, तुम जीत गई। अब तुम जो चाहे मांग लो। आशा के काफी जोर देने पर मुरला आशा की पाँच साल की बिटिया मांग लेती है। अर्थात् मुरला ने शादी न करके जो जीता था, वह बच्ची मांग कर गवा दाती है और आशा शर्त हारने पर भी शादी और बच्चों के होने से जीत जाती है।

प्रस्तुत कहानी की सहेलियों में नायिका या मुख्य पात्र की भूमिका में अंत की जीत के कारण आशा आ जाती है। आशा की अपनी उपलब्धि शादी और बच्चों के अलावा कुछ नहीं है। जबकि मुरला अपनी शिक्षा पूरी कर शिक्षा विभाग में उच्च पद पर कार्यरत है। इसके बावजूद लेखिका उसके चरित्र एवं व्यक्तित्व को खारिज करती है। इतना ही नहीं मजबूरी में शादी करने वाली नलिनी से भी मुरला का व्यक्तित्व जीत के बदले बच्ची मांगने से गौण बन जाता है। अर्थात् तीनों सहेलियों में मुरला का चरित्र स्वयंभू, स्वतंत्र, स्वशासित एवं अनुशासित होने पर भी नारी श्रेष्ठता के परंपरागत मानदंडों की कसौटी पर मात खा जाता है। यहाँ मन्नू भंडारी का नारीवाद परंपरा पोशाक पुरुषप्रधान व्यवस्था का अनुगामी एवं नारी उत्थान की दिशा को भ्रमित करने वाला जान पड़ता है।

लेखिका, लेखिका के पात्र खुद अपने ही सवालों को भेदने में नाकाम होते हैं। नलिनी शादी के समय किताबें तो लेकर जाती है लेकिन चाह कर भी बी.ए. की परीक्षाएँ नहीं दे पाती है। शादी और बच्चें उसकी शिक्षा हजम कर जाते हैं। आशा एम.ए. की परीक्षाएँ तो देती है लेकिन पढ़ाई का अपने जीवन में व्यावसायिक तौर पर प्रयोग नहीं कर पाती है। आम धारणा की तरह उसकी शिक्षा भी विवाह होने तक ही चलती है। शादी करने की बात पर मुरला आशा से कहती

है, " .... सहारा उसे चाहिए जो अपने को अबला समझे।.... बच्चों को तो मैं अपनी उन्नति का बाधक समझती हूँ।..."[5] मुरला की यह बात कहानी के पात्र यथार्थ कर दिखाते हैं। नलिनी चाहकर भी आगे पढ नहीं पाती है और न कुछ कर पाती है। आशा की भी पढ़ाई छूट जाती है और तीन बच्चों की माँ होना ही उसकी अपनी कमाई है। इन प्रसंगों मे नलिनी और आशा की उन्नति में बच्चें बाधा ही बने हैं। कहानी एक ओर शादी की अनिवार्यता की बात करती है, दूसरी ओर नारी जीवन की पूर्णतः बच्चों में खोजती है तो तीसरे नारी उत्थान और प्रगति में बच्चों को बाधक भी मानती है। कहानी में 'वदोतो व्याघ्यात' का दोष दिखाई देता है।

कहानी में नलिनी, आशा, और मुरला को सहेलियों के रूप में चित्रित किया गया है। लेकिन इनकी मित्रता निरंतर स्पर्धा करती दिखाई देती है। नलिनी की शादी होने पर वह खुद को मात्र किताबी कीड़ा नहीं समझती जबकि उस समय आशा और मुरला केवल किताबों को महत्व देने वाली थी। नलिनी से मिलकर बाहर आने पर आशा नलिनी और उसके बच्चे के बारे में कहती है, " मेरा घर, मेरा पति, मेरी बच्ची।....। उस पाँच महीने के मांस के लोथडे में उसे जाने कहाँ की समझ और होशियारी दिखाई दे रही थी। बुरी तरह बोर कर दिया।"[6] आशा के मन में अपनी सहाली के प्रति सहानुभूति तक नहीं है । मुरला की शर्त जीतने से तात्पर्य है उसका घर न बसना। उसकी जीत पर आशा को दुखी होना चाहिए था किंतु शर्त की याद दिलाते हुए आशा कहती है, " मैं हार गई तू जो चाहे मांग ले मैं दूंगी। सच पूछो तो अपनी इस हार में भी मुझे प्रसन्नता है।"[7] यानी अपनी सहेली का घर न बसना आशा के लिए प्रसन्नता की बात है।

मन्नू भंडारी इस कहानी को एक सकारात्मक दिशा और उच्च चरित्र देने में चूक जाती है। सस्ती दूरदर्शन धारावाहिकों की तरह उसने अपने पैरों पर खड़ी, अपने निर्णय लेने में सक्षम नारी पात्र को गौण किरदार में चित्रित किया है और पति, भाग्य, ईश्वर, बच्चों को अपना सर्वस्व मानती नारी पात्र को नायिका बना दिया है। क्या यह भूमिका नारी चिंतन, नारी उत्थान के अनुकूल है? लेखिका 'आशा' को ही नायिका बनाना चाहती तब भी यह पात्र अधिक सशक्त नहीं बनाया जा सकता था? क्या आशा शादी के बाद भी अपनी पढ़ाई पूरी कर पति की फिक्र और बच्चों की परवरिश करते हुए नौकरी या अपनी शिक्षा के अनुकूल व्यवसाय कर अपने सामाजिक अस्तित्व को नहीं उभर पाती? अगर ऐसा होता तो वह संघर्ष करती, अपने अस्तित्व के लिए लड़ती-झगड़ती नारियों के लिए एक सबक बन जाती। आशा का चरित्र अनुकरणीय बन जाता।

इसके विपरीत कहानी में चित्रित अल्पसंतुष्ट, आत्ममुग्ध आशा का किरदार चुनौतियों का सामना कर आगे बढ़ते नारी जज्बे को न केवल सेंध लगाने का काम करता है बल्कि उसके राह में रोडे भी अटकाता है।

लेखिका इस कहानी में उन हजारों-लाखों नारी चरित्रों को अनदेखा करती है जो यथास्थितिवादी मान्यताएँ, समाज, परिवार की लानतें झेलते हुए पति- बच्चों की जिम्मेदारियाँ उठाते हुए भी अपनी योग्यता और संघर्षशील स्वभाव के बल पर आगे बढ़ रही है। आने वाली पीढ़ी के लिए नई राह बनाने में योगदान दे रही है। कहानी ऐसे नारियों की घोर निराशा करती है। 'नारी विमर्श के संदर्भ में मन्नू भंडारी का लेखन' विषय पर संशोधन करने वाले सचिन कुमार लिखते हैं, " स्त्री की समस्याएँ आज भी है जिन से मुक्ति मिलने का प्रयास नारी कर रही है। जब स्त्री अपने विविध स्थितियों में अपने अस्तित्व और अस्मिता को सुरक्षित रख सकेगी तभी उसे गरिमा प्राप्त होगी।"[8] लेकिन प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने समस्याओं के समाधान के रूप में, नारी सुरक्षा और उसके गरिमा के रूप में शादी और बच्चों को रखा है। क्या इससे नारी गरिमा की रक्षा होगी? कहानी का मुख्य पात्र आशा मुरला का विरोध करते हुए कहती है," यदि तू शादी को व्यक्तित्व बेचना ही समझती है तो इतना मैं भी अवश्य कहूंगी कि जिस कीमत पर हम व्यक्तित्व बेचते हैं। इतनी अवश्य होती है कि सौदा घंटे का नहीं होता।..."[9] इस रूप में लेखिका और लेखिका का पात्र नारी व्यक्तित्व की अंतिम परिणीति शादी ही मानता है।

लेखिका के प्रभाव के चलते, नारीवादी चिंतन के प्रति की सहानुभूति के कारण, अर्धचेतन मन के परंपरागत संस्कारों से वशीभूत होकर या हरा चश्मा लगाकर नारी जीवन का एकमात्र लक्ष्य शादी मानने वाली प्रस्तुत कहानी में हर हाल में अच्छाई ढूंढने निकले तो 'नारी के मातृत्व की कहानी' का ठप्पा इस पर लगाकर हम संतोष प्राप्त कर सकते हैं। जो कि आशा और नलिनी की जीवन उपलब्धि है। मुरला के पास अपना नाम है, काम है, पहचान है, उसे सभा की अध्यक्षता के लिए इलाहाबाद से बुलावा आता है लेकिन उसे अपना बच्चा नहीं है। यह अभाव उसके व्यक्तित्व और अस्तित्व को नकारता है। वह शर्त के जीतने पर बच्ची मांगती है और नारी के अधुनातन, विकासोन्मुख, आत्मनिर्भर भूमिका को पुनः मध्यकालीन सोच से जोड़ती है। यहाँ मुरला के मातृत्व का ही उद्धार करना था तो क्या आशा की बच्ची मांगने का ही एकमात्र पर्याय था? क्या यह पर्याय कहानी के प्रभाव को उदासीन, नकारात्मक दिशा में नहीं मोड़ता? मुरला का

मातृत्व आशा की बच्ची मांगने से ही संतुष्ट होगा? लेखिका यहाँ मुरला के मातृत्व से अधिक उसके अभावपूर्ति को दर्शाती है।

सिमोन द बोउआर नारी चरित्र निर्माण के संदर्भ में कहती है," दरअसल स्त्री पैदा नहीं होती बल्कि बना दी जाती है।"[10] इस परिप्रेक्ष्य में जिस प्रकार परिवार और समाज के सांचों में स्त्री बनती है, उसी प्रकार साहित्य के पात्र भी लेखक की मनोभूमि के अनुकूल नहीं ढलते? पात्र लेखक की विचारधारा से परिचालित नहीं होते? इस रूप में मुरला का चरित्र हारने के लिए ही नहीं गढा गया है? वह शादी न करने पर भी हारी है और शादी करने पर भी हार ही जाती। यह सबसे अधिक विचलित करनेवाली बात है कि जो पात्र सबसे अधिक सशक्त, प्रभावशाली है, उसे परंपरागत मानदंडों पर हारने के लिए विवश किया गया है। मुरला मुझे बलि चढ़ाने के लिए पाले गए पशु सी निरीह और असहाय दिखाई देती है। इस कहानी में लेखिका तो जीत जाती है लेकिन कहानी के संदर्भ हार जाते हैं।

संक्षेप में मन्नू भंडारी का नारीवाद समाज, संस्कृति तथा पारिवारिक व्यवस्था से तालमेल बिठाते हुए पुरुष और नारी के सामंजस्य को स्वीकार करता है। वे समाज तथा पुरुष विरोध के बजाय पुरुष सहचार्य की भूमिका अपनाती है। इसके बावजूद प्रस्तुत कहानी में उनकी यह मान्यता गड़बड़ाती हुई दिखाई देती है। वह पुरुष के साथ सामंजस्य के बजाय पुरुषप्रधान व्यवस्था से सामंजस्य स्थापित करती दिखाई देती है। आशा के चरित्र के माध्यम से वे नारी के परंपरागत जीवन और व्यक्तित्व का समर्थन कर मुरला के विकासोन्मुक्त चरित्र को नकार प्रस्थापित व्यवस्था के चुंगल से मुक्त होती नारी का विश्वासघात करती है। मातृत्व नारी जीवन का अहम पक्ष है। किंतु उसे दर्शाने के लिए अन्य योग्यताओं की उपेक्षा, परंपरागत चरित्र के अवलंब का दुराग्रह नारी की परंपरागत जकड़न को मजबूत बनाता है।

निष्कर्ष:

मन्नू भंडारी के 'जीती बाजी की हार' कहानी के विवेचनोपरांत निष्कर्ष रूप में निम्न बिंदुओं को रखा जाता है-

१. 'जीती बाजी की हार' कहानी परंपरागत रुढ़िवादी मानसिकता, संस्कृति का समर्थन करते करते नारी उत्थान, नारी चिंतन को गलत दिशा में मोड़ देती है।
२. प्रस्तुत कहानी के माध्यम से उच्च अनुकरणीय चरित्र निर्माण में लेखिका चुक गई है।
३. प्रस्तुत कहानी को नारी के ममतामई रूप को व्यक्त करने वाली कहानी मानना मात्र कल्पना विलास होगा। जबकि स्पष्ट रूप से कहानी विवाह की अनिवार्यता को व्यक्त करती है।

४. टीवी धारावाहिकों की सस्ती लोकप्रियता की तर्ज पर कहानी का प्रतिभाशाली, उच्च शिक्षित, नौकरी पेशा पात्र उपहास का विषय बना है तो बच्चे, पति पर मुग्ध पात्र प्रशंसा का भागी बना है।

५. प्रस्तुत कहानी के नारी पात्रों, उनकी विचारों, व्यवहारों तथा संवादों के माध्यम से नारीवादी चिंतन के विपरीत स्थिति पैदा की गई है। इस कहानी में 'वदोतो व्याघ्यात' का दोष दिखाई देता है।

६. नारी श्रेष्ठता के परंपरागत मानदंडों को प्राथमिकता देने वाली प्रस्तुत कहानी प्रतिभा, उच्च शिक्षा, आत्मनिर्भरता से अधिक बच्चों और पति तक नारी जीवन को कुंठित कर देती है।

७. 'जीती बाजी की हार' कहानी, कहानी के पात्र तथा कहानी का उद्देश्य नारीवादी चिंतन की कसौटी पर खरे नहीं उतरते।

संदर्भ :

१. कथादेश - सं. हरिनारायण, जनवरी, 2009 साक्षात्कार - पृ.174-75

२. जीती बाजी की हार- गद्य संचयन- सं.डॉ. संजय चिंदगे, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली. पृ. 12

३. जीती बाजी की हार- गद्य संचयन- सं.डॉ. संजय चिंदगे, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली. पृ. 13

४. जीती बाजी की हार- गद्य संचयन- सं.डॉ. संजय चिंदगे, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली. पृ. 16

५. जीती बाजी की हार- गद्य संचयन- सं.डॉ. संजय चिंदगे, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली. पृ. 16

६. जीती बाजी की हार- गद्य संचयन- सं.डॉ. संजय चिंदगे, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली. पृ. 13

७. जीती बाजी की हार- गद्य संचयन- सं.डॉ. संजय चिंदगे, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली. पृ. 17

८. नारी विमर्श के संदर्भ में मन्नू भंडारी का लेखन(शोध प्रबंध)- डॉ सचिन कुमार, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़. पृ.41

९. जीती बाजी की हार- गद्य संचयन- सं.डॉ. संजय चिंदगे, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली. पृ. 15

१०. स्त्री उपेक्षिता- अनुवाद- डॉ प्रभा खेतान, हिंदी पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली. पृ. 68